सं. म्रो.वि./जी.जी.एन./84-85/41622.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. राकेश इण्डस्ट्रोज, कीर्ती नगर, गुड़गांव, के श्रमिक श्री विशव दास ग्ररोड़ा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मोद्योगिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिग्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाण। के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रा न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री विशन दास धरोड़ा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. श्रो.वि./एफ.डी./168-85/41624.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दी चीफ इंजीनियर थरमल पावर हाउस एच.एस.ई.बी. फरीदाबाद, (2) सिवव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़, के श्रमिक श्री दुली चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिवितियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिविस्चना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिवित्यम की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में दैने हेतु निद्घट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्कों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित मामला है:—

क्या श्री दुली चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?
सं. ग्रो.वि./एफ.डी./168-85/41632. —चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दी चीफ इंजीनियर यरमल
पावर हाउस एच.एस.ई.बी., फ़रीदाबाद, (2) सचिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड चण्डीगढ़, के श्रीमक श्री चिन्ता मनी तथा
उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिशिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20, जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रकन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उस से सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री चिन्ता मनी की सेवाश्रों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. श्रो.वि./एफ.डी./168-85/41640.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. दी चीफ इंजीनियर यरमल पावर हाउस, एच.एस.ई.बी. फ़रीदाबाद, (2) पावव, हरियाणा विजली राज्य बोर्ड, चण्डीगढ, के श्रामिक श्री प्रताप सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीबोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्राधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की नई मिलियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम- 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के प्राचीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं की कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित मामला है :--

क्या श्री प्रताप सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?